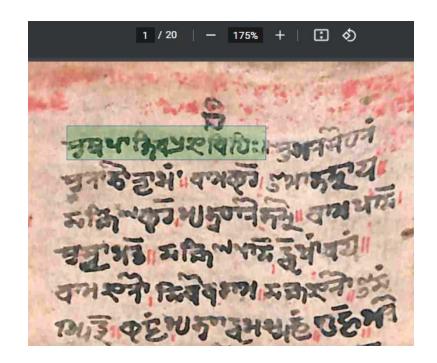
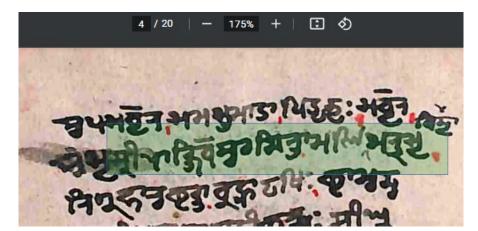
shopian 2.pdf

Title: Parthiva Puja Vidhi

अथ पार्थिव पूजा विधिः ।





श्री पार्थिवेश्वर चिन्तमणि मन्त्रस्य

नुष्य विषय स्विति ।। उपनित्र व चनके द्यां विभक्त द्याहरू या क्राक्षान्य भागवानिक्षे वाष्ट्राया न्याभावता मिल्या स्थापन वस्ति हिन्द्रिमा इहार्य दे वाइ वहाणग्यमसह प्रकार भदने नाहिभागभुके हति उपाउ मुभरा नामधुर पुरुष्ठ महिल्यु न्यवंभाग चीवाया वयानाय भाष श यभिक्षते ने हुये: हमान्यु भर भ क्र न उद्धः येनच्रेरुक प्रद इवारा भग्ना भागिया भड़ियां

नश्येः

दिक्त्य एवण्येः उष्ट्रत्रम् भन्द ये इन्डिम्म मिग्मिय उन्हें निन ए अभद्भार कर्ष यत्रीन यूवा बद्धाः प्रकृष्ट मन्यः चडी जानि हतः नेने पः वित यहे द्वापात था धन्यः त्रात्रम्तः एद्वयः यवा नेथु भग्में येः स्थानीन एवमर्थः अध्येम किन् यमभन्द्र विकिन्। नमेरात्र हाक येरावे प्राप्ति । रमाहिंहनिम भिन्न मिस्य क तरह यनस्य वहणागणन्य राभ जंभारराभे अद्विष्ठः राभे मिर्पार्धी

P

रण्डिमायाया न्यभाव राज्याम डीहिर्सेवं विभागवर् रामार्भने अप एक्विवनभारि निम्प्या महाभारे मुकुरवर्ग अदग्री पद्मे दुर्गं भिवाय अपनि भार राज्य भा किवज्याय क्वायम्याय ३ व्या य मवय मस्य महम्य उश् य भेराय मभेर मिन्यायय विद्याग्रम्य स्थातन विच्डिपाय नलक्षाद्वा उक्तरपाय वि मयराय उन्ने क्रिमाग्य एउवेसम उ वाभुस्याय भार 237545 E 34

म्यम्हन् भगकुगडा थिउहः भकुन अध्योगित्रविष्ठित्र भारति नियुन्न खुः युक्त विश्व स्थाप गम्भद्रगग्यर्किः मीन् वरम्भड्य भारतिष्ठिक्षितिस् इवड हिंबीए श्रीमित्र नमः सी लेश्र अलम्मिविभिया :॥भवद्गार अभियः।। रिमुकी सी मिव्भू उद्गीय प्राचित देश हैं भविक्याभिड्डास्ट्राप्ति । व्यवप्रातः 明記を大力である。 द्रेक्षण्ड्रभूषिडमुडाधरक्षणल

नुगळ ३ अदिवा अभिवा ३ अभिवा 853593-72109C737332C ग्रहला असः।। ज्यस्य भागिकः शः ।।। इद्भुत्रथाय वि॥३॥इत्रथाय वि३॥ भावसुराचि सुलद्धाणी इत्रः भिवः १०) भारति श्वाचिति भारति देशका उत्र न मिडिक्टियि देसे दुराय की उर्वे ३ डर्जियापि वर्ड उन्हेंग्रीणी ड्रिक्जीय 3 क्षिक्यायि अन्याध्यापी जिल्ला भुक्तांयि एमिनि निणी डेवेठनः र ३ वाभारताय्वि । अमुडा हुं भः विव्धु ०० अह भई कि द्वेत के अध

भाष्णिनेने प्रवर्तिः नुभन्। विन मुगभद्रव्यव गलमानामाना किन्भीमान मार्थिय परमेसा देश मिवश्र कि । विन अस्थ नी ए ज्यान्य जुमाद्याः वाभुद्धवर उद्मानमाना भक्षण्याउच्याः मियाय स्वाड विना उ की ए जिमारी देश एके ही नद्यामानद्वा रभन्यत्व नुद्वेड क्रावन द्रांभाः मिवं हव मवं , इ विनार क्रींक मार्व जमा वार्म के इ व्या दयकामा जयादिकार प्रभूत विकित्रण यद्वा अस्य केव से वन व मर्श्वेष्ट्र मुद्रम् विष्युत्रम्

A 3

नियाना कार्या अधिक के विकास म उद्गार भद्रम् का मण्या प्राप्त मरान्यम् अग्रेशियम् विकेमीय नीलक्ष हिम्मा निरुभा क्रिश्रह्मणम् द्वार्थराग्रहः रमद्रम्भयन्भवन्य भवन्य भद्गन्य दन्य युवा न भारिभुका मा। ए वेडल कु कु कु भगभीन भद्भयं। भक्तभ्राभुडभूक भक्तकन्तरागुड्य भिक्तभन्ग्य क्षेत्रम्बरम्बरम्य उसा पिति देव नियम मिलिय में जाती भग्रिक लभुका हु भुज्ञ द गवड वि अभ क्षिक के के हैं है उन्हें में अपने के मित्रमा रागरा हुए गर्स में अपना पुरमा रिमर्देशन भिरुक्त युश्चानिया विद्याला । अल्लेम्बा मुन्द्रित्रियले मुन्द्रिया क्रीवेषुक् भीवीयनं सब ने पूर्व क्रिया नुस्भिष्ट्रम् सम्बद्धाः भामिए स्वस्वम्भर गुभविग्ठवा। यद्राम्भा अर् य्या र्भा कि विश्व क्षेत्रवारम्बन् उडमण्डलगरु त्भयाने भड़ियान भित्र विकास करिया न्द्रियव्यक्त भविव्यक्षाहित याव ३ भए य धुरिभ उपवस्त १ ५८ वड िट्रेक्किय्यया। इमराना अवर्गम् यन् विश्वानम् द्वा विश्व हर्गा सिरंहरवाका नामिन्यने उड्डिसिडिसन्गित्रभाव दिया MEH

5

जन यथभन्त भिनुम् हुम्मार्भिक्र भेगद्व ने जने यथे श्वाधार्य द्या भेड़भी। जिक्सामार्डिक भी मां भारति । चुरुद्यामिश्र एवंभी चुरे गरी निस्मिन्न भारति में मिन् करमा करामित्र नद्रमुख्ने वि श्रीवं उत्रेभाषाक्त अत्रभाषुका द्यामद्रह्मं जलम्भुग्रियिक एय द्राप्तां मरी। चुर द भड़म्ब क्रिम्में वर्षा अव दया भड़े करें। न्युक्टयास्थ्यभा हवावयुक्त मी। हे उद्यक्ति। स्ययम्भा भनेकवी दिवस्थित्कः भार्ते अद्भवभद्र मान भड़ानक्षणकर णडणपष्ट भम्डुंथ चडी भद्धितृतु र्णभः ः विनयः जीरंजभाग ऽ गुक्त नभः ॥

अवः अव न्यूपः की उक्तप्य सुरे स्विड्ड इन्नेक्सभयकार्धि राम्राज्यातक स्वयं मभवेभभाई डिनाउक दुंभ: विव ध्वचव ०० विन्यस् नीर जान नुम गल्या देवक्यायः प्रदेशः॥ क्रिवेयाम सत्रवृभिद्रांभः मिर्वाय -वुजभनीयनभाष्ट्रिंगनुरुप्रीनित नममीक् अस यह अभने ज्य भविदेशक्किरंग प्रमानगा। इक्राधिर देशमाना हिंदानका भवद्भंदा काली हुई भारती क्र हे दे दे विकास निवास के क्षेत्र भिना च हर में वाच निवा चिडिभाव अन्।। उउः विमिष्ठभने।। भी मिर्माउन ५ ९०

用当

विंदी:

उठ: अरुमम्ब्रान्यंत्रमभानं इ इ:भागावा भागमञ्जू उन्डम्भयः थीत दिन्त्रे उवडा अववाड नामावन क्षित्र भारति भारति । भद्राराम् भन्द्रिया ाव । विव विक्ति भी मह हः कार्यक्यः कर्म अस् प्रीयः दल्तरी ग्रिकं उद्यु दि खुद्धां किल्लाकः ध रनुसर ०५ डव्स मिदाय ०० भाष्ट्रम्भागे उसस्वर्भार

न्माष्ट्र अपने मिन्धु ॥ उरेग अन्त जामार्ग क्षांच्या अभाग्याम्या विकास श्रुतं को इब्हः बिन्युप्रीभा अन्वाः प्रदेश चुर्द्रका १६न विकावस्य द्वाः जनार गर्ने निष्ठुड च्यांड्रड मुधाभन्म मन्स्य उस्ता अन स्टाईक् स्था वश्चन्द्रभूमा हगभूत्रमय डाँड मञ्भावि॥ अदिभः भागामिक युवाभवाभःवयु कालाप्रे मञ्च व्यवग्राध्यम्य १ वर्षण्य ०० इवसम्ब्राह्यभावडमा द्वासः मिवा यवस्तानाः।

7

उप्डेमेमना यश्चिभवीं भवत् डारेकिड कि इये ए भवीडियं निन क्लभयामं यदा भाषाम् अपूर्व र्भः सियाययरे भवी उन्मः॥ पुरे उन्भेगर भनेरारणार्जिकि व्याभाभाषुः गर्णकार्य वमाध्याद्य मिरिहामा इंग्मः मिवायगाउत्तरा प्रवेशमा प्र थ्याजी। भग्निव सिवानक न्त्रीयोग्न ए, व्हिण्यक्रमण्ड नक्ति विकिश्मिण्यान्त्रमा रंभः मिवाय मुद्देनभः पृथं नभः क्रियंत्रक ये दिल्ला भुवन्भः सव्याम्ब्यास्यान्त्र स्वामः

## चिम्रीः

१ मृत्यदेवाय भवन् अर्वनमः भ अभडमव्यन्भः क्राम्य उप उत्पर्यक्ष सम्भुद्रपन्म: भद्रम्य अरूपु- डीमण्यम वाय- वराभावम् उम्माय वेषण जिल्ला अवसि पयं प्रिल्म अवस्तु अवन र्य अस्तिम दुर्ग हुर देख उच्चे उस्मज्य रेस कि उ प्रीक्ष्य एयर मुन्तर ंग्यन ग्यान्य उत्ते इत

नार्यान मार्थित करातिक इंग्य्याभ्याय कुलेग्य उद्गत्रभा य्चनवाय भद्रमुग्य उर्व प्रधेतमः विक्रमुग्गालम् मुल्स्मान युक्तः मागवर्षि अयुक्त अयु क्लिस्डा अन्य में किय भिवंडभाग एक्नड्य एक्न र्य रिधार मीक्ष्ण्यभाष श्चिम क्रीष्ट्र भिष्ठिम हो भर जगरवर्त न्याभाषायुर्ध प्रमाय का ज्ञानभागनान्य य नियान भड़ कला स हिर्दे मद्य वीयर य ज्ञागाय कार्य क्य महित्राय

विवासिक के विकासिक उमानवः व उर्मचनः ले द्रम्यवरः र मार्थन र देशभाष्य मार्थन रहे मि-वंबर्भात्र में नेवार्वयेत्र के जिसीगया नेगमाय नेप्रक्र न्विष्ट्रिया गठा सुरम अरायाय विरामय एचने अहगाय ह होंग्य अनगित्राज्य राज्य र्राज्ञ भन्यर के भार वे क्षेत्र वणाकुतानांहे विश्वन श्रीस्तर नेट्व यर्गेन नु भाग युग्य चेद्रभाउंच सुद्र्य मनमुग्य गद्व रेउव्युक्त

STALE BY

प्रयं काण्य जनगय विश्व इस्य भग्ये विदाय प्रभाव गलभाग्यम्बय यहीष्ठामा अनुवनगरस्यनमः वाभुवितः नित्र अद्भाष्ट्र क्रिया नियभाजन नियम प्रविष्ति । बङ्गाद मज्यद स्फ्रायद विश्व प्रभाय व प्रत्यक र्ययदिष्ठुल्यह प्रयुच्ह भद्रयक भयुषा असेवड हिनभः॥ नमहिन् युरुष्ठ युन्य चिण्यवेत्राः भन्नाभडय उह मिक्यम नमेनभः मिन्ने ग्रेमिक CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

क्लबंडक्क्रम्याय रंभः मिवाय न्त्रीत्मः अधीत्मः ग्रेचम्य पूर्व भीति अद्भारत्था मनीम राग मीमित्रक्षेत्र प्रभावता महिला मद्धेयुक्रिक्तियाम् रूभःवि या अमुभागाः। गय्येथे भे देलिया दिन्द्रभीन जीन मीम नडिमिष मीनेप्रहालक्युर कापना रिअमि विडमी रूमः मिवायित मुद्रीन।। प्रवश्च द्वामान। या भने गए मी नाय भने दिए प्रस्तु उभाग दमम ह्याउम्य गादाल किएएग्रीएम्यभवरामण न रण्यमें गेरी अव रण्य

A Y

क्राफ्ट्रिक्ट क्राफ्ट्रिक क्रिक्ट्रिक रण्यक्त विग्राम्न द्यक्तमन कार्य कार्य हेल्ड्रिक केर्य निन्भभन्न एयपन्गार्थ एयमिनमंद्रमुन श्वानुक्रिये मसे रायवे की किकार रायभाक क्रमंडीउएयम् निरुपान्डा एये विकास के कर देन किर्वायः एयम्भूक्षालम् स श्रुप्तिम्बर्ज्यु एविष्ठप्ति स्मित्वविद्विक्तान्य राय भाष्ट्रमण्ट्र याष्ट्रायुक्त एशिन्सम्बर्ध राय्युं जात्रेय रायपुड्मा मीकि रायदाराउक्र

क्षित्रक क्ष्यवर क्ष्यवर क्ष्य एवम्बन्भा एवमगुर्द्ध एवन्ड विदेशक्रिया के अध्याक दिया माना नभराकि के हैं के मेरे । नवार भयकि बु अङ्गावनिक विडम यहालका कराय कर भने कि च्युनभः प्रनच्यु इत्वित्रे व भारती है विद्या शापवार क्रे में है: र्शितं यहित्रक्षाराभी निमानमाः उसुकाः चुमने यस प्रभाग्नभग्रुल विश्वेमध्यानिम्बड उन्भेडिपम मान मा लेक्स या भारता अम त्रमाः १०५ हे प्रयामाः वासेत्रमः युद्धान हुन्ने गृह्म निष्टु

門门。